International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद के लिए उपलब्ध आधारभूत संरचना, संसाधन एवं शिक्षकों की स्थिति का अध्ययन

अमित कुमार आनंद[1], डॉ0 चंद्रशेखर बी0 कडू[2]

[1]शोधार्थी (नेट), शंकरलाल खंडेलवाल कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, अकोला
संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती
[2]मार्गदर्शक (नेट, पी–एच0डी0), शंकरलाल खंडेलवाल कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, अकोला
संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती

सार

शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाते हैं, बल्कि मानसिक संतुलन, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) तथा विभिन्न राष्ट्रीय खेल नीतियों में विद्यालय स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। इसके बावजूद बिहार के अनेक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में खेल मैदान, खेल उपकरण, व्यायामशाला, शौचालय, पेयजल, चेंजिंग रूम तथा अन्य आवश्यक खेल–संबंधी आधारभूत सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। साथ ही प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कमी, सीमित वित्तीय संसाधन तथा खेल गतिविधियों के प्रति अपर्याप्त संस्थागत समर्थन जैसी समस्याएँ भी विद्यमान हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद हेतु उपलब्ध आधारभूत संरचना, संसाधनों तथा शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की वर्तमान स्थिति का समग्र मूल्यांकन करना है। अध्ययन में विद्यालयों में उपलब्ध खेल मैदान, खेल उपकरण, खेल बजट, पुस्तकालय एवं प्रशिक्षण सुविधाओं के साथ–साथ शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की संख्या, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योग्यता, नियुक्ति की स्थिति, प्रशिक्षण, कार्यभार तथा खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन में उनकी भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों तथा सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के बीच उपलब्ध सुविधाओं की तुलनात्मक समीक्षा भी की जाएगी।

शब्दकुंजी : शारीरिक शिक्षा, खेल–कूद, प्रशिक्षण, व्यायाम, खेल उपकरण एवं खेल बजट इत्यादि

परिचय :

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय विकास की आधारशिला होती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। इस सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक एवं सामाजिक विकास समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद इसी समग्र शिक्षा प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग हैं, जो विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ

मस्तिष्क का विकास संभव है। इसलिए विद्यालयी शिक्षा में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद को केवल सह–पाठ्यक्रम गतिविधि न मानकर शिक्षा का अभिन्न अंग माना जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार नियमित शारीरिक गतिविधियाँ बच्चों एवं किशोरों के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं। खेल गतिविधियाँ मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा अन्य जीवनशैली संबंधी रोगों की रोकथाम में सहायक होती हैं। साथ ही ये तनाव, अवसाद तथा चिंता जैसी मानसिक समस्याओं को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, समय प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व, सहिष्णुता तथा टीम भावना का विकास होता है। यही कारण है कि विश्व के अधिकांश विकसित देशों ने विद्यालयी शिक्षा में खेल एवं शारीरिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया है।

भारत में भी शारीरिक शिक्षा का महत्व निरंतर बढ़ा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरुकुलों में विद्यार्थियों को योग, व्यायाम, धनुर्विद्या, कुश्ती, घुड़सवारी तथा विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जाता था। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के आधुनिकीकरण के साथ–साथ शारीरिक शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया। समय–समय पर गठित विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं समितियों, जैसे कोठारी आयोग (1964–66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1992) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आवश्यक घटक माना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में खेल–आधारित अधिगम, अनुभवात्मक अधिगम तथा स्वास्थ्य एवं कल्याण को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न भाग बनाया गया है।

भारत सरकार द्वारा 'फिट इंडिया मूवमेंट', 'खेलो इंडिया कार्यक्रम', 'राष्ट्रीय खेल नीति' तथा 'समग्र शिक्षा अभियान' जैसी अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जिनका उद्देश्य विद्यालय स्तर पर खेल संस्कृति का विकास करना तथा विद्यार्थियों को नियमित खेल गतिविधियों से जोड़ना है। इन योजनाओं के माध्यम से विद्यालयों में खेल मैदानों का विकास, खेल उपकरणों की उपलब्धता, प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की नियुक्ति तथा खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके बावजूद अनेक राज्यों, विशेषकर ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद की स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं मानी जाती।

बिहार भारत के उन राज्यों में से एक है जहाँ विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विद्यालयों की संख्या, नामांकन दर तथा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही सरकार द्वारा विद्यालयी आधारभूत संरचना के विकास हेतु अनेक योजनाएँ लागू की गई हैं। फिर भी शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। राज्य के अनेक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पर्याप्त खेल मैदान उपलब्ध नहीं हैं। जहाँ खेल मैदान हैं भी, वहाँ उनका समुचित रख–रखाव नहीं हो पाता। कई विद्यालयों में खेल सामग्री सीमित मात्रा में उपलब्ध है अथवा पुराने एवं अनुपयोगी उपकरणों का उपयोग किया जाता है। व्यायामशाला, चेंजिंग रूम, प्राथमिक उपचार कक्ष, पेयजल एवं स्वच्छ शौचालय जैसी आवश्यक सुविधाओं का भी अभाव देखा जाता है।

विद्यालयों में आधारभूत संरचना की उपलब्धता सीधे–सीधे विद्यार्थियों की खेल सहभागिता को प्रभावित करती है। यदि विद्यालय में पर्याप्त मैदान, खेल सामग्री, सुरक्षित वातावरण तथा नियमित खेल गतिविधियाँ उपलब्ध हों तो विद्यार्थियों की भागीदारी स्वतः बढ़ती है। इसके विपरीत संसाधनों के अभाव में खेल गतिविधियाँ केवल औपचारिकता बनकर रह जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक विद्यालयों में विद्यार्थियों को सीमित संसाधनों के कारण अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर नहीं मिल पाता, जबकि शहरी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाओं के कारण अधिक अवसर प्रदान करते हैं। यह असमानता शिक्षा की गुणवत्ता एवं खेल प्रतिभा दोनों को प्रभावित करती है।

शारीरिक शिक्षा की सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार प्रशिक्षित एवं योग्य शिक्षक होते हैं। शारीरिक शिक्षा शिक्षक केवल खेल गतिविधियों का संचालन नहीं करते, बल्कि विद्यार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा, फिटनेस, पोषण, योग, व्यायाम, खेल नैतिकता तथा अनुशासन के प्रति भी जागरूक बनाते हैं। वे विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता का मूल्यांकन करते

हैं, खेल प्रतिभाओं की पहचान करते हैं तथा उन्हें उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करते हैं। इसलिए विद्यालयों में पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की उपलब्धता अत्यंत आवश्यक है।

बिहार के अनेक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कई विद्यालयों में नियमित शारीरिक शिक्षा शिक्षक नियुक्त नहीं हैं तथा अन्य विषयों के शिक्षक खेल गतिविधियों का संचालन करते हैं। कहीं–कहीं अनुबंधित अथवा अतिथि शिक्षकों के माध्यम से कार्य कराया जाता है। प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण खेल प्रशिक्षण, फिटनेस परीक्षण, योग प्रशिक्षण तथा नियमित खेल अभ्यास प्रभावित होता है। इससे विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियों तथा स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

संसाधनों की उपलब्धता भी शारीरिक शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। खेल सामग्री, खेल बजट, प्रशिक्षण उपकरण, डिजिटल संसाधन, पुस्तकालय, प्राथमिक उपचार सामग्री तथा खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण खेल वातावरण के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। कई विद्यालयों में खेल सामग्री का वितरण अनियमित होता है तथा उपकरणों के रख–रखाव के लिए पर्याप्त बजट उपलब्ध नहीं होता। परिणामस्वरूप खेल गतिविधियाँ निरंतर संचालित नहीं हो पातीं।

बिहार के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों के बीच आधारभूत संरचना एवं संसाधनों की उपलब्धता में उल्लेखनीय अंतर पाया जाता है। ग्रामीण विद्यालयों में भूमि, संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक एवं वित्तीय सहायता की कमी अधिक देखने को मिलती है, जबकि शहरी विद्यालय अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाओं से युक्त होते हैं। इसी प्रकार सरकारी एवं निजी विद्यालयों में भी खेल सुविधाओं एवं शिक्षकों की उपलब्धता में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। यह असमानता विद्यार्थियों के खेल प्रदर्शन, स्वास्थ्य तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती है। इसलिए इन अंतरों का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विद्यालयी शिक्षा में खेलों को मुख्यधारा से जोड़ने पर विशेष बल देती है। नीति के अनुसार खेल एवं शारीरिक गतिविधियों को विद्यार्थियों के समग्र विकास, जीवन कौशल तथा स्वास्थ्य संवर्धन का माध्यम माना गया है। इसी प्रकार 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम विद्यालय स्तर पर खेल प्रतिभाओं की पहचान एवं विकास को प्रोत्साहित करता है। इन नीतियों एवं कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का वास्तविक मूल्यांकन तभी संभव है जब विद्यालय स्तर पर उपलब्ध आधारभूत संरचना, संसाधनों एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की स्थिति का वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए।

वर्तमान समय में किशोरों में बढ़ती निष्क्रिय जीवनशैली, डिजिटल उपकरणों का अत्यधिक उपयोग, मोटापा, तनाव तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ विद्यालयों में नियमित शारीरिक गतिविधियों की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती हैं। यदि विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण खेल सुविधाएँ उपलब्ध हों तथा प्रशिक्षित शिक्षक नियमित रूप से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें, तो इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। साथ ही खेल गतिविधियाँ विद्यार्थियों को नशामुक्त, अनुशासित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद के लिए उपलब्ध आधारभूत संरचना, संसाधनों तथा शिक्षकों की वर्तमान स्थिति का व्यापक विश्लेषण करना है। अध्ययन में विद्यालयों में उपलब्ध खेल मैदान, खेल उपकरण, व्यायामशाला, पुस्तकालय, खेल बजट, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सुविधाएँ, प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की संख्या, उनकी शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योग्यता, प्रशिक्षण, अनुभव तथा खेल गतिविधियों के संचालन में उनकी भूमिका का मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही ग्रामीण एवं शहरी तथा सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के बीच उपलब्ध सुविधाओं की तुलनात्मक समीक्षा भी की जाएगी।

यह अध्ययन शिक्षा नीति–निर्माताओं, राज्य सरकार, शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रबंधन समितियों, शारीरिक शिक्षा शिक्षकों तथा शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। अध्ययन के निष्कर्ष बिहार में विद्यालयी खेल व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करेंगे तथा आधारभूत संरचना के विकास, संसाधनों के न्यायसंगत वितरण, प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, खेल बजट में वृद्धि तथा खेल–केंद्रित विद्यालयी वातावरण के निर्माण के लिए प्रभावी नीतिगत सुझाव प्रदान करेंगे। इससे न केवल विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होगा, बल्कि राज्य में खेल प्रतिभाओं

के विकास, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन तथा स्वस्थ एवं सक्रिय समाज के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा।

अतः यह अध्ययन बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद की वर्तमान स्थिति का समग्र एवं वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसके माध्यम से यह समझने का अवसर मिलेगा कि विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत संरचना, संसाधन एवं प्रशिक्षित शिक्षक किस सीमा तक विद्यार्थियों के समग्र विकास में योगदान दे रहे हैं तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा एवं खेल नीति के प्रभावी क्रियान्वयन तथा विद्यालयी खेल संस्कृति के सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण अकादमिक एवं व्यावहारिक योगदान प्रदान करेगा।

साहित्य की समीक्षा

बुचर (1983)[1] ने अपनी पुस्तक 'Foundations of Physical Education and Sport' में स्पष्ट किया कि शारीरिक शिक्षा विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग है। लेखक के अनुसार खेल–कूद विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तक में यह भी उल्लेख किया गया है कि गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा के लिए पर्याप्त खेल मैदान, उपकरण तथा प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षक आवश्यक हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आधारभूत संरचना एवं योग्य शिक्षक विद्यालयी खेल कार्यक्रमों की सफलता के प्रमुख आधार हैं।

यूनेस्को (2015)[2] ने 'Quality Physical Education ¼QPE½: Guidelines for Policy Makers' में विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा हेतु पर्याप्त आधारभूत संरचना, सुरक्षित खेल मैदान, खेल सामग्री, समावेशी वातावरण तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता पर बल दिया। रिपोर्ट के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (2020)[3] ने बच्चों एवं किशोरों के लिए नियमित शारीरिक गतिविधियों को अनिवार्य बताते हुए विद्यालयों में खेल सुविधाओं एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता पर बल दिया। रिपोर्ट के अनुसार विद्यालयों में पर्याप्त खेल सुविधाएँ विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी तथा स्वास्थ्य सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मोना भूमिज (2018)[4] ने माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल सुविधाओं का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अनेक विद्यालयों में खेल मैदान, उपकरण तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम प्रभावी रूप से संचालित नहीं हो पा रहे हैं। शोध में खेल सुविधाओं के विस्तार तथा वित्तीय संसाधनों में वृद्धि की आवश्यकता पर बल दिया गया।

रिचर्ड बेली (2006)[5] ने विद्यालयी शारीरिक शिक्षा के प्रभावों का व्यापक विश्लेषण किया। अध्ययन में बताया गया कि नियमित खेल गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक विकास, शैक्षणिक उपलब्धि तथा सामाजिक व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। लेखक ने यह भी बताया कि इन लाभों के लिए विद्यालयों में पर्याप्त संसाधन एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता आवश्यक है।

सुरेश एवं कौर (2022)[6] ने भारत के उत्तरी एवं दक्षिणी राज्यों में सरकारी विद्यालयों की शारीरिक शिक्षा की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में खेल आधारभूत संरचना, खेल निधि, मानव संसाधन तथा शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की उपलब्धता का विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष में राज्यों के बीच उल्लेखनीय असमानता पाई गई तथा विद्यालयों में खेल सुविधाओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकता बताई गई।

गांगुली एवं रॉय चौधरी (2026)[7] ने भारत के राज्यों में विद्यालयी आधारभूत संरचना एवं शैक्षिक परिणामों का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि केवल आधारभूत संरचना पर्याप्त नहीं हैय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रशिक्षित शिक्षक, प्रभावी प्रशासन, संसाधनों का उचित उपयोग तथा सतत निगरानी भी आवश्यक है। यह अध्ययन विद्यालयी खेल सुविधाओं के मूल्यांकन के लिए भी उपयोगी आधार प्रदान करता है।

वुड्स एवं सहयोगियों (2023)[8] ने विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा, खेल गतिविधियों एवं संसाधनों के मूल्यांकन हेतु एक व्यापक रूपरेखा विकसित की। अध्ययन में विद्यालय प्रबंधन, खेल उपकरण, खेल बजट, समय–सारिणी, पाठ्यक्रम, आधारभूत संरचना तथा प्रशिक्षित शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा के प्रमुख निर्धारक बताया गया।

उद्देश्य

1. बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद हेतु उपलब्ध आधारभूत संरचना की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. विद्यालयों में उपलब्ध खेल संसाधनों, खेल उपकरणों, खेल बजट एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं का मूल्यांकन करना।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की संख्या, शैक्षणिक योग्यता, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं नियुक्ति की स्थिति का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी तथा सरकारी एवं गैर–सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उपलब्ध खेल सुविधाओं, संसाधनों एवं शिक्षकों की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद की अवधारणा

शारीरिक शिक्षा शिक्षा प्रणाली का वह महत्वपूर्ण अंग है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास करना है। खेल–कूद केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सहयोग, आत्मविश्वास तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी शारीरिक शिक्षा, खेल, योग एवं स्वास्थ्य शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न भाग माना गया है। गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा के लिए केवल पाठ्यक्रम पर्याप्त नहीं होता, बल्कि विद्यालयों में उपयुक्त आधारभूत संरचना, पर्याप्त संसाधन तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता भी आवश्यक होती है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचना का महत्व

विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत संरचना विद्यार्थियों की खेल सहभागिता एवं प्रदर्शन को सीधे प्रभावित करती है। एक आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में पर्याप्त आकार का खेल मैदान, एथलेटिक्स ट्रैक, वॉलीबॉल एवं बास्केटबॉल कोर्ट, कबड्डी एवं खो–खो मैदान, योग कक्ष, व्यायामशाला, चेंजिंग रूम, प्राथमिक उपचार कक्ष, सुरक्षित पेयजल, स्वच्छ शौचालय तथा खेल सामग्री भंडारण कक्ष जैसी सुविधाएँ होनी चाहिए। बिहार में विद्यालयी आधारभूत संरचना के विकास के लिए राज्य सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। विद्यालय भवनों के निर्माण एवं आधुनिकीकरण में सुधार हुआ है, किंतु अनेक विद्यालयों में खेल संबंधी आधारभूत सुविधाएँ अभी भी अपर्याप्त हैं। राज्य स्तर के हालिया शिक्षा विश्लेषणों एवं प्रदर्शन आकलनों में भी यह संकेत मिलता है कि सामान्य विद्यालयी सुविधाओं में सुधार के बावजूद खेल एवं मनोरंजन संबंधी आधारभूत संरचना अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है।

खेल मैदान एवं खेल सुविधाओं की उपलब्धता

खेल मैदान विद्यालयी खेल संस्कृति की आधारशिला है। पर्याप्त एवं सुरक्षित खेल मैदान के अभाव में विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर नहीं मिल पाता। बिहार के अनेक ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में भूमि की कमी, अतिक्रमण अथवा सीमित संसाधनों के कारण खेल मैदान उपलब्ध नहीं हैं या उनका आकार मानकों के अनुरूप नहीं है। जहाँ खेल मैदान उपलब्ध हैं, वहाँ भी नियमित रख–रखाव, समतलीकरण, घास, सुरक्षा व्यवस्था तथा प्रकाश व्यवस्था जैसी सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। परिणामस्वरूप खेल गतिविधियाँ केवल वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं तक सीमित रह जाती हैं। हाल के आँकड़े भी दर्शाते हैं कि राज्य के अनेक विद्यालयों में खेल मैदानों की उपलब्धता अभी भी एक बड़ी चुनौती है।

खेल उपकरण एवं संसाधनों की स्थिति

आधारभूत संरचना के साथ–साथ खेल उपकरणों की उपलब्धता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, कबड्डी, खो–खो, बैडमिंटन, एथलेटिक्स, योग मैट, जिम्नास्टिक उपकरण तथा प्राथमिक चिकित्सा सामग्री जैसे संसाधन विद्यालयों में नियमित रूप से उपलब्ध होने चाहिए। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो अनेक सरकारी विद्यालयों में खेल सामग्री सीमित मात्रा में उपलब्ध होती है। कई बार उपकरण पुराने, क्षतिग्रस्त अथवा अनुपयोगी हो जाते हैं तथा उनके नवीनीकरण के लिए पर्याप्त बजट उपलब्ध नहीं होता। संसाधनों के असमान वितरण के कारण शहरी विद्यालयों की तुलना में ग्रामीण विद्यालय अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होते हैं।

खेल बजट एवं वित्तीय संसाधन

विद्यालयों में खेल गतिविधियों के प्रभावी संचालन के लिए नियमित वित्तीय सहायता आवश्यक है। खेल उपकरणों की खरीद, मैदानों के रख–रखाव, प्रतियोगिताओं के आयोजन तथा खिलाड़ियों के प्रशिक्षण हेतु पृथक खेल बजट की आवश्यकता होती है। बिहार के अनेक सरकारी विद्यालयों में खेलों के लिए सीमित वित्तीय संसाधन उपलब्ध होने के कारण खेल गतिविधियाँ अपेक्षित स्तर पर संचालित नहीं हो पातीं। निजी विद्यालयों की तुलना में सरकारी विद्यालयों को इस क्षेत्र में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए विद्यालय स्तर पर खेल निधि के प्रभावी उपयोग तथा अतिरिक्त वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।

शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की स्थिति

प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षक विद्यालयी खेल व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उनका कार्य केवल खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता का विकास, स्वास्थ्य शिक्षा, योग प्रशिक्षण, फिटनेस परीक्षण, खेल प्रतिभाओं की पहचान तथा प्रतियोगी प्रशिक्षण भी है। बिहार के अनेक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। कई विद्यालयों में नियमित शारीरिक शिक्षा शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं तथा अन्य विषयों के शिक्षक अतिरिक्त दायित्व के रूप में खेल गतिविधियों का संचालन करते हैं। इससे खेल प्रशिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

हाल के शिक्षा संबंधी आकलनों में यह भी रेखांकित किया गया है कि बिहार में शिक्षक–प्रशिक्षण और मानव संसाधन के क्षेत्र में सुधार हुए हैं, किंतु विद्यालयों के बीच संसाधनों एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता में असमानता अभी भी बनी हुई है।

शिक्षकों की योग्यता एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण

शारीरिक शिक्षा शिक्षक के लिए केवल शैक्षणिक योग्यता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि बी.पी.एड., एम.पी.एड. अथवा समकक्ष व्यावसायिक प्रशिक्षण भी आवश्यक होता है। नियमित सेवाकालीन प्रशिक्षण, खेल विज्ञान, खेल चिकित्सा, फिटनेस मूल्यांकन तथा आधुनिक प्रशिक्षण तकनीकों का ज्ञान भी आवश्यक है। कई विद्यालयों में शिक्षकों को आधुनिक खेल प्रशिक्षण, डिजिटल खेल प्रबंधन तथा खेल मनोविज्ञान संबंधी प्रशिक्षण पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हो पाता। इससे विद्यार्थियों की प्रतिस्पर्धात्मक तैयारी प्रभावित होती है। नियमित क्षमता–विकास कार्यक्रम इस कमी को दूर करने में सहायक हो सकते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों की तुलनात्मक स्थिति

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के बीच खेल सुविधाओं की उपलब्धता में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। शहरी विद्यालयों में खेल मैदान, प्रशिक्षित शिक्षक, खेल सामग्री एवं प्रतियोगिताओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है। दूसरी ओर ग्रामीण विद्यालय भूमि, वित्तीय संसाधनों तथा प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी से जूझते हैं। इसी प्रकार सरकारी

एवं निजी विद्यालयों के बीच भी पर्याप्त अंतर पाया जाता है। निजी विद्यालय आधुनिक खेल सुविधाएँ विकसित करने में अधिक सक्षम होते हैं, जबकि सरकारी विद्यालय सरकारी योजनाओं एवं बजट पर निर्भर रहते हैं।

सरकारी योजनाएँ एवं नीतिगत पहल

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), खेलो इंडिया, फिट इंडिया मूवमेंट तथा समग्र शिक्षा अभियान के माध्यम से विद्यालयी खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। बिहार सरकार भी विद्यालयी आधारभूत संरचना के विकास तथा शैक्षिक परिसरों के आधुनिकीकरण के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कार्य कर रही है। इन पहलों के बावजूद खेल सुविधाओं के समान वितरण, प्रशिक्षित शिक्षकों की पर्याप्त नियुक्ति, खेल उपकरणों की नियमित उपलब्धता तथा विद्यालय स्तर पर खेल संस्कृति को सुदृढ़ बनाने की दिशा में अभी भी निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

सुधार की संभावनाएँ

बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में मानक खेल मैदान, पर्याप्त खेल उपकरण, पृथक खेल बजट, नियमित रख–रखाव, प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की नियुक्ति तथा समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। साथ ही जिला एवं राज्य स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन, स्थानीय खेल प्रतिभाओं की पहचान, डिजिटल खेल प्रबंधन प्रणाली तथा विद्यालय–समुदाय सहभागिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में खेलों के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा बिहार राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक खेल प्रतिभाएँ विकसित कर सकेगा।

निष्कर्ष

शारीरिक शिक्षा एवं खेल–कूद विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इनका प्रभाव केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक संतुलन, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक समन्वय, आत्मविश्वास तथा नैतिक मूल्यों के विकास में भी महत्वपूर्ण है। इसलिए उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करना आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता है। बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि राज्य में विद्यालयी शिक्षा के सामान्य आधारभूत ढाँचे में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं, किंतु खेल संबंधी आधारभूत संरचना, खेल संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की नियुक्ति के क्षेत्र में अभी भी उल्लेखनीय चुनौतियाँ मौजूद हैं। अनेक विद्यालयों में खेल मैदानों का अभाव, सीमित खेल सामग्री, अपर्याप्त वित्तीय संसाधन तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण खेल गतिविधियाँ अपेक्षित स्तर पर संचालित नहीं हो पातीं। हाल के राज्य स्तरीय शिक्षा आकलनों में भी यह संकेत मिलता है कि विद्यालयी खेल एवं आधारभूत सुविधाओं को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता बनी हुई है।

भविष्य में आवश्यक है कि राज्य सरकार, शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रबंधन समितियाँ तथा स्थानीय समुदाय मिलकर विद्यालयों में खेल सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता दें। प्रत्येक उच्च माध्यमिक विद्यालय में मानक खेल मैदान, पर्याप्त खेल उपकरण, नियमित खेल बजट तथा प्रशिक्षित शारीरिक शिक्षा शिक्षक उपलब्ध कराए जाएँ। साथ ही शिक्षकों के लिए सतत व्यावसायिक प्रशिक्षण, खेल विज्ञान आधारित शिक्षण तथा विद्यार्थियों के लिए नियमित खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन सुनिश्चित किया जाए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि बिहार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आधारभूत संरचना, संसाधनों एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता को सुदृढ़ किया जाए, तो न केवल विद्यार्थियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास

बेहतर होगा, बल्कि राज्य में खेल प्रतिभाओं के विकास, स्वस्थ नागरिकों के निर्माण तथा राष्ट्रीय खेल उपलब्धियों में भी उल्लेखनीय वृद्धि संभव होगी।

संदर्भ–सूची :

1. Bucher, C. A. (1983). *Foundations of Physical Education and Sport*. 10th Edition. St. Louis: Mosby College Publishing.
2. UNESCO. (2015). *Quality Physical Education (QPE): Guidelines for Policy Makers*. Paris: United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
3. World Health Organization. (2020). *WHO Guidelines on Physical Activity and Sedentary Behaviour*. Geneva: World Health Organization.
4. Bhumij, M. (2018). *An Investigation into Physical Education and Sports Facilities for Secondary School Students*. South Asian Journal of Marketing & Management Research, 8(5), 33–39.
5. Bailey, R. (2006). Physical Education and Sport in Schools: A Review of Benefits and Outcomes. *Journal of School Health*, 76(8), 397–401.
6. Kumar, S., Dhaliwal, A. K., & Kaur, M. (2022). Status of Physical Education in Northern and Southern States of India. *Journal of Positive School Psychology*, 6(9), 1117–1128.
7. Ganguly, B., & Roy Chowdhury, S. (2026). Does Physical Infrastructure of Schools Necessarily Lead to Better Education Outcomes? An Empirical Evidence from Sub-national India. *Global Business Review*. https://doi.org/10.1177/09721509261436230
8. Woods, C. B., Powell, C., Saunders, J., et al. (2023). School-based Physical Education, Physical Activity and Sports Provision: A Concept Mapping Framework for Evaluation. *International Journal of Behavioral Nutrition and Physical Activity*, 20(1).